उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

किरण मिश्रा
व्याख्याता, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्य प्रदेश) भारत

सांराश
प्रस्तुत शोधपत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमनें उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का समूह है। आंकडों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में एस.के. वर्मा का मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि मापन के लिए शैक्षिक रिकार्ड का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि एव मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नही होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बध होता है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि प्रत्येक माता–पिता यह चाहते है कि उनका बालक कक्षा में हमेशा प्रथम आए और वह बालक पर हमेशा दबाव बनाए रखते है। इससे बालक के अंदर मानसिक तनाव जन्म लेता है। और तनाव बढ़ता रहता है। मानसिक तनाव चरम पर पहुँच जाता है जिससे बालक के अंदर नकारात्मक विचारों की उत्पति होती है और वातावरण के साथ समायोजन नही कर पाता है। उसका मानसिक स्वास्थ्य इतना गिर जाता है कि वह आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेता है।

मुख्यबिन्दुः– छात्र एवं छात्राएँ, शैक्षिक उपलब्धि एव मानसिक स्वास्थ्य

I प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी प्रबुद्ध जनशक्ति होती है, जिसका निर्माण सुव्यवस्थित एवं व्यापक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से होता है। जन्तु जगत के अन्तर्गत ईश्वर की समस्त कृतियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। ईश्वर ने उसे अन्य जीवों से अधिक बुद्धि प्रदान की है अन्य जीवों में सीमित क्षमता होती है जबकि मनुष्य की क्षमतायें असीमित होती है मनुष्य की क्षमताओं के अन्तर्गत उसका चिंतन, तार्किक शक्ति, बुद्धि विशेष उल्लेखनीय है।जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भाँति समाज शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तांतरित करता है कि उनके हृदय में देश प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्जवलित हो जाती है।

(क) मानसिक स्वास्थ्य

'मानसिक स्वास्थ्य' का अर्थ व्यापक है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए कुप्पूस्वामी ने लिखा है– मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक रागों की अनुपस्थिति नहीं है। इसके विपरीत, यह व्यक्ति के दैनिक जीवन का सक्रिय और निश्चित गुण है। यह गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता है, जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ–साथ कार्य करते हैं। उसके विचार, भावनाएँ और क्रियाएं एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती है। मानसिक स्वास्थ्य, कार्य की ऐसी आदतों और व्यक्तियों तथा वस्तुओं के प्रति ऐसे दृष्टिकोणों को व्यक्त करता है, जिनसे व्यक्ति को अधिकतम संतोष ओर आनन्द प्राप्त होता है। पर व्यक्ति को यह संतोष और आनन्द उस समूह या समाज से, जिसका कि वह सदस्य होता है, तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त करना पड़ता है। इस प्रकार, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन की वह प्रक्रिया है, जिसमें रागझौता ओर सामंजस्य, विकास और निरन्तरता का समावेश रहाता है।''

(ख) शैक्षिक उपलब्धि

व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान व कौशल प्राप्त करता है। इस प्रकार ज्ञान व कौशल में व्यक्ति ने कितनी दक्षता प्राप्त की है इसका पता उस ज्ञान तथा कौशल के उपलब्धि था निष्पत्ति परीक्षण से प्राप्त होता है। प्रायः यह व्यावहारिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि व्यक्ति कक्षा के बाहर भी अनेक प्रकार के संस्थाओं के द्वारा अपने अंदर योगयता धारण करता है। जो कुछ हमें अनुभव या धिक्षण की आवश्यकता होती है। या प्राप्त करते है। उनका समाज के द्वारा समय–समय पर परीक्षण होना चाहिए इस प्रकार के मूल्यांकन से प्राप्त परिणाम को हम शैक्षिक उपलब्धि कहते है।

II पूर्व शोध कार्य

सिन्हा और भान (2000) के अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन तथा मनोसामाजिक विधियों का अध्ययन करना था। उन्होनें अपने प्रतिदर्श में 259 पुरूष, 118 गहिलाएँ तथा 293 पुरूष इंजीनियरिंग संकाय में सम्मिलित किये। इन्होनें विद्यार्थियों की सुरक्षा, असुरक्षा के मापन के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा स्कोर के आधार पर विद्यार्थियों को दो समूह में विभाजित किया। जो एक तिहाई से कम थे उनमें असुरक्षा की भावना अधिक थी और सातवें हिस्सें से अधिक थे, उनमें सुरक्षा की भावना अधिक थी। इन

दोनों समूहों को टी.ए.टी. टैस्ट दिया गया। इसके पश्चात् इन सभी का साक्षात्कार हुआ। साक्षात्कार में विद्यार्थियों से पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और खर्च करने संबंधी अनेक समस्याओं से संबंधी अनेक समस्याओं से संबंधित प्रश्न पूछे गये। समस्त आंकड़ो का "टी–टेस्ट" की सहायता से विश्लेषण करने पर निम्नलिखत परिणाम प्राप्त हुए। इंजीनियर विद्यार्थी विश्वविद्यालयी छात्रों की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से उच्च थे। विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओ के मध्य भावनात्मक सुरक्षा में अन्तर नही था। प्राकृतिक विज्ञान समूह, मानव विज्ञान समूह और सामाजिक विज्ञान समूह की तुलना में भावनात्मक सुरक्षा की दृष्टि से उच्च पाया गया। भावात्मक रूप से असुरक्षित समूह भावात्मक सुरक्षा से पीडित पाया गया। मानव विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक दृष्टि से अन्तर नही पाया गया। कृषक समुदाय के बच्चों में संवेगात्मक असुरक्षा पायी गया।

III समस्या, उद्देश्य तथा परिकल्पनाएं कथन

(क) समस्या कथन– उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

(ख) अध्ययन के उद्देश्य–

(i) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii) उच्चतर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध ज्ञात करना।

(ग) अध्ययन की परिकल्पानाएं–

(i) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नही होता है।

(ii) उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही होता है।

(iii) उच्चतर माध्यमिक स्तर के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सह सम्बध नही पया जाता हैं।

IV न्यादर्श, शोधविधि तथा शोध उपकरण

(क) अध्ययन का न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का समूह है।

(ख) शोध विधि

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

(i) **शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर**

स्वतन्त्र चर – मानसिक स्वास्थ्य

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

(ii) **शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी**

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

- **मध्यमान**
- **मानक विचलन**
- **टी टेस्ट**
- **सह–सम्बन्ध**

(iii) **शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण**

आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में एस.के. वर्मा का मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि मापन के लिए शैक्षिक रिकार्ड का प्रयोग किया गया।

V विश्लेषण तथा निष्कर्ष

(क) विश्लेषण परिकल्पना क्रमांक – 1

सारणी क्रमांक :– 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
छात्र	50	31	13.7	2.40	सार्थक अन्तर नही है
छात्रा	50	22.9	11.5		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों के समूह के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 31., छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 22.9 से 9.3 अधिक है। छात्रों के समूह के मानसिक स्वास्थ्य का मानक विचलन 13.7 छात्राओं के समूह के मानसिक स्वास्थ्य के मानक विचलन 11.5 से 3.अधिक है। यह दर्शाता है कि छात्रो कि विचलनशीलता अधिक है।

(ख) निष्कर्ष परिकल्पना

अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 2.11 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.40 से कम है। अतः इन

दोनो समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर नही है। अतः हम कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अंतर नही होता है

(ग) विश्लेषण परिकल्पना क्रमांक – 2

सारणी क्रमांक :– 2.

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थकता

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
छात्र	50	72	13.1	1.70	सार्थक अन्तर नही है
छात्रा	50	63	9.4		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों के समूह के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 72., छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 63 से 6 अधिक है। छात्रों के समूह के शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन 13.1 छात्राओं के समूह के शैक्षिक उपलब्धि के मानक विचलन 9.4 से 1.9 अधिक है। यह दर्शाता है कि छात्रो कि विचलनशीलता अधिक है।

(घ) निष्कर्ष परिकल्पना 2 –

अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान 1.70 है जो 0.01 विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान 2.59 से कम है। अतः इन दोनो समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर नही है। अतः हम कह सकते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही होता है।

(च) विश्लेषण परिकल्पना क्रमांक – 3

सारणी क्रमांक :– 3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

चर	संख्या	सारणीमान (r)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता 0.05 स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	100	.88	.766	सार्थक
मानसिक स्वास्थ्य				

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.1 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसंबंध गुणांक ;तद्ध .783 है। जबकि क98 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान .88 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .88ढ.766। अतः सहसंबंध सार्थक है।

(क) निष्कर्ष परिकल्पना –3

इस प्रकार कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध है। इस प्रकार परिकल्पना क्रं. असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

VI परिणाम

वर्तमान समय में प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चें को अच्छे स्कूल में पढ़ाना चाहते है और उनके अच्छे कैरियर के प्रति आशावान होते है परन्तु वह यह नही देखते है कि उनके बालक की रूचि एवं क्षमता क्या है प्रत्येक माता–पिता यह चाहते है कि उनका बालक कक्षा में हमेशा प्रथम आए और वह बालक पर हमेशा दबाव बनाए रखते है। इससे बालक के अंदर मानसिक तनाव जन्म लेता है। और तनाव बढ़ता रहता है। मानसिक तनाव चरम पर पहुँच जाता है जिससे बालक के अंदर नकारात्मक विचारों की उत्पति होती है और वातावरण के साथ समायोजन नही कर पाता है। उसका मानसिक स्वास्थ्य इतना गिर जाता है कि वह आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेता है। मानव का विकास ही तनाव से शुरू होता है क्यों कि जब तक व्यक्ति अपने अंदर तनाव महसूस नही करता वो उस तनाव के लक्ष्य की ओर ध्यान नही देता। इस कारण से मानव जीवन के अच्छे समय के लिए तनाव आवश्यक भाग हो जाता है। मगर प्रश्न यह उठता है कि तनाव व्यक्ति में किस अनुपात में होता है। क्या पचास प्रतिशत या सौ प्रतिशत ? क्यों कि तमाम विकास को अवरोध करने का श्रेय ही इसी को जाता है। यदि वे व्यवस्थित नही रहा तो बीमारियों का मूल आधार भी नही होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] **मंगल एस.के. (2009) शिक्षा मनोविज्ञान** ''नई दिल्ली प्रिन्टेस हाल आफ इण्डिया।

[2] **शर्मा आर.ए. (2006) शैक्षिक अनुसन्धान**, मेरठ आर लाल बुक डिपों 528.

[3] **सरीन एवं स्टीन (2005) शैक्षिक अनुसन्धान** विधियों विनोद पुस्तक मंदिर।

[4] **सिंट रामपाल एवं शर्मा ओ.पी. (2001) शैक्षिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी**, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।

[5] **शर्मा बी.एन.(1999) शिक्षा मनोविज्ञान** साहित्य प्रकाशन आपका बाजार हास्पिटल रोड आगरा–3

[6] **पाठक पी.डी. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान''** विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।